आज की मुरली का सार --- **Date: 15-05-2014**

बाबा ने कहा, बच्चों को किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी हैं. मांगने से मरना भला.

भक्तिमार्ग में लास्ट 63 जन्मो से हम भगवान से कुछ ना कुछ मांगते ही आये हैं, जब की भगवान को हम जानते नहीं थे. ज्ञानमार्ग में भगवान स्वयं हमें मिला हैं और वह हमें बता रहे हैं की किसी भी प्रकार की चाहना नहीं रखनी हैं. मांगने से मरना भला. क्यों?

भक्तिमार्ग में ज्यादातर आत्माये सुख और शांति मांगती हैं, क्योंकि आत्मा जानती हैं की भगवान ने आकर हमें सुख और शांति दी थी. लेकिन कब दी थी और कैसे दी थी वह याद नहीं हैं, तो अल्प काल के सुख और शांति के लिए आत्मा भगवान से कुछ ना कुछ मांगती ही रहती हैं.

ज्ञानमार्ग में बाबा जबसे हमें गोद लेता हैं यानी हमें बच्चा बनाते हैं तो हम बाप के वर्से के हकदार औटोमेटिकली बन जाते हैं और बाप का वर्सा हैं 21 जन्म स्वर्ग में सुख और शांति का. तो बाबा से हम लास्ट 63 जन्मो से मांगते थे वो तो बाप ने हमें पहले ही दिन दे दिया हैं.

अब तो हमें पुरुषार्थ करना हैं सतयुग में ऊँच पद पाने का और सतयुग में ऊँच पद पाने के लिए संपूर्ण पावन यहॉ बनना हैं. संपूर्ण पावन आत्मा यानी संपूर्ण निर्विकारी.

हम स्वयं में चेक करें की हमारे में किसी भी प्रकार की चाहना हैं, खाने-पीने की, गुमने कि, देखने की, पहन ने की...तो मेरे में सूक्ष्म में मोह कि रग हैं और यह मोह की रग मुझे अन्त समय में नष्टो मोहा, स्मृति लब्धा बनने नहीं देगी. <u>इसलिए अभी से मन में ये पक्का कर लेना हैं कि ये कल्प का अंतिम जन्म बाबा हमें जो खिलायेगा, जैसा भी रखे...कोई भी कम्पलेन बाप से करनी नहीं हैं और जो भी स्थिति में बाबा हमें रखे हमेशा खुश रहना ही हैं.</u>

ॐ शांति.